

पिंजरे में कैद चिड़िए



पिंजरे में कैद चिड़िए

कम्बोडिया की राजधानी नोम-पेन्ह के बाहर चिड़िये मुक्त होकर पीली हवा पर तैरती हैं. वे धान के खेतों और पेड़ों और अनंत आसमान के चक्कर लगाती हैं. **अरी** को न इन चिड़ियों के बारे में पता है और न ही स्वच्छ पीली हवा के बारे में. अरी को जो चिड़िये दिखाई देती हैं वो सब पिंजरों में कैद हैं. वे चिड़िए अपने खाने और पानी के लिए चिड़िए बेंचने वाली औरत पर आश्रित होती हैं. उन चिड़ियों को अपनी आज़ादी भूलने की ट्रेनिंग दी जाती है.

अरी भी चिड़ियों की तरह खुद को कैद पाती है. अरी का परिवार बहुत गरीब है. अरी अपने परिवार के लिए कई मन्नतें माँगना चाहती ही. वो चिड़ियों वाली औरत से एक चिड़िया खरीदकर उसे मुक्त छोड़ना चाहती है जिससे की उसकी मनोकामना पूरी हो सके. परंपरा के अनुसार ऐसी मानना है कि जो कोई चिड़िया को मुक्त करता है उसकी मनोकामना ज़रूर पूरी होती है.

अरी को डर है कि उसके सपने कभी पूरे नहीं होंगे. इसलिए उसे अपने ज्ञान और अपनी आत्मा की शक्ति का उपयोग करना होगा अपनी मनोकामनाओं को पीली हवा तक पहुँचाने के लिए. तभी उसे और उसके परिवार को गरीबी की जंजीरों से मुक्ति मिलेगी.

पिंजरे में कैद चिड़िए





नोम-पेन्ह शहर के बाहर धीमे-धीमे पीली हवा बह रही थी. कम्बोडिया में धान का रंग और सूरज की रोशनी, हवा को पीला रंग देती थी. उससे धान तेज़ी से बढ़ता था और बच्चों को कटोरे भर-भर कर भात खाने को मिलता था.



अरी ने जीवन के आठों साल भीड़ वाली सड़कों पर गुज़ारे थे. रोजाना वो भात के साथ नमकीन मछली खाती थी. वो शहर के बाहर कभी नहीं गई थी और उसने कभी भी धान उगते हुए नहीं देखा था. दुकानदार और व्यापारी उसे कम्बोडिया की राजधानी के बाहर की हरी दुनिया की कहानियां सुनाते थे. उनके अनुसार शहर के बाहर आज़ाद चिड़िये थीं - चिड़िये जिनके रंग हज़ार पतंगों से भी ज़्यादा चटकीले थे, और जो नीले आकाश में मुक्त होकर उड़ती थीं.

नोम-पेन्ह तक पहुँचने से पहले वो हवा कोयले के धुएँ और मोटरसाइकिल के धुएँ के साथ मिल जाती थीं. फिर पीली साफ़ हवा, सिलेटी और स्याह रंग की हो जाती थी. उस स्याह हवा में सांस लेना भी मुश्किल होता था.





गर्मियों में एक दिन अरी सुबह जल्दी उठी. उसने अपनी सोने वाली चटाई के नीचे हाथ डाला और 300 रील (रूपए) निकले. उसने यह पैसे पर्यटकों को फूलों की मालाएं बेंचकर कमाए थे. अभी उसके माता-पिता, तीन भाई और दो बहनें ज़मीन पर ही सो रहे थे. अरी ने हल्के के से घर का दरवाज़ा खोला और वो बाहर निकली. वो शहर के पुराने हिस्से में गई जो वाट नोम-पेन्ह के नाम से जाना जाता था. वहां पर बुद्ध विहार के पास व्यापारी अपनी-अपनी दुकानें सजा रहे थे, और पर्यटक महंगे होटलों और गेस्ट-हाउसेस में सुबह का नाश्ता कर रहे थे.





चिड़िये बेंचने वाली औरत ने अरी को कपटी निगाहों से देखा.

“छोटी लड़की, तुम इतनी सुबह-सुबह यहाँ पर क्यों आई हो? इस समय तुम्हारे फूल खरीदने के लिए यहाँ कोई पर्यटक नहीं हैं.”

“आज मैं कुछ बेंचने नहीं आई हूँ,” अरी ने कहा. “आज सुबह मैं तुमसे एक छोटी चिड़िया खरीदने आई हूँ. मैं उस चिड़िया को खरीदकर मुक्त छोड़ना चाहती हूँ जिससे परिवार की खुशहाली के लिए मेरी मनोकामना पूरी हो.”

“यहाँ पर यही रिवाज़ है,” चिड़ियों वाली औरत ने जवाब दिया. “पर बेटी सपने तो धनी और शक्तिशाली लोगों के लिए होते हैं. क्योंकि तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं, इसलिए तुम सीधी घर जाओ.”



फिर चिड़ियों वाली औरत ने अपने पिंजरे को एक तरफ झुकाया. एक साथ सौ चिड़ियों ने छोटे-छोटे बीज खाए और एक कटोरी में से पानी पिया. चिड़िये बांस की सीकों पर तार के बने पिंजरे के अन्दर बैठी थीं. वो एक तरह से जेल में बंद थीं फिर भी वे पक्षियों के गीत गा रही थी. अरी ने उन छोटे कैदियों को संवेदना से देखा. उनकी आवाज़ और गीतों में दुःख भरा था. अरी को खुद भी अक्सर अपनी ज़िन्दगी उसी तरह लगती थी.

“मैंने 300 रीएल इकठ्ठे किये हैं,” अरी ने कहा.

उसने वो पैसे उस बूढ़ी औरत के हाथ में रखे. चिड़ियों वाली औरत ने उन सिक्कों को अपनी हथेली पर उल्टा-पुल्टा और गिना.

“चलो अब तुम अपनी मर्ज़ी की चिड़िया चुनो और उसे अपनी मनोकामना बताओ.”



उसके बाद अरी ने तार के बने पिंजरे के दरवाज़े में अपना हाथ डाला। अन्दर चिड़िये बांस की सीकों पर अब एक-दूसरे से और सटकर बैठ गईं। उस जेल में अरी अपनी पसंद की चिड़िया खोजने लगी।

अरी ने बहुत हल्के से फिर एक छोटी चिड़िया को पकड़ा। वो चिड़िया डर के मारे पिंजरे के एक कोने में छिपी थी। उस चिड़िया का मुँह खुला था और वो तेज़ी से सांस ले रही थी। अरी उसके दिल की तेज़ धड़कन को महसूस कर सकती थी।

“जल्दी करो। अपनी मनोकामना कहो और चिड़िया को हवा में छोड़ो,” चिड़ियों वाली औरत ने कहा। “अगर तुमने चिड़िया को जल्दी नहीं छोड़ा तो वो डर से मर जाएगी।”

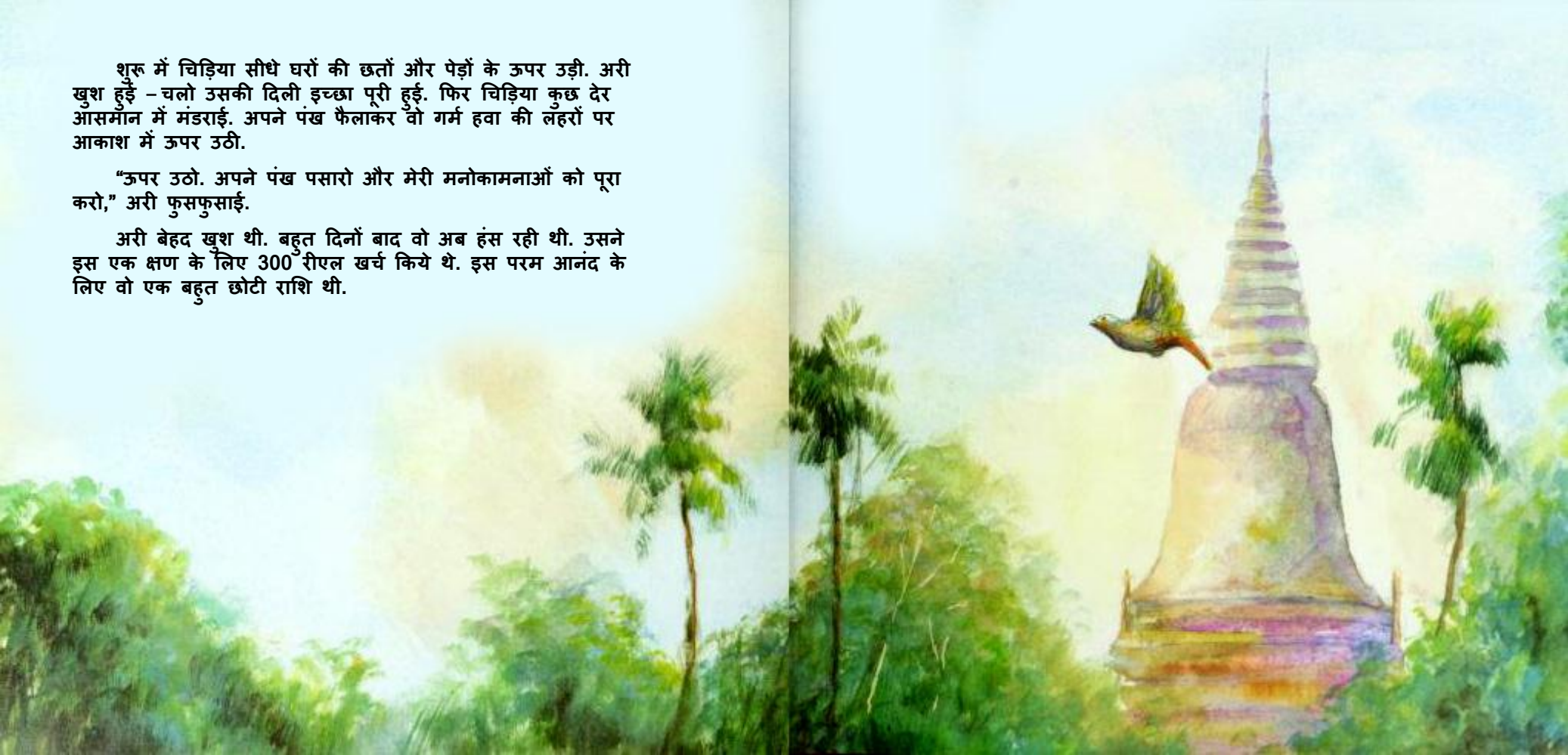
अरी के ज़हन में अलग-अलग मनोकामनाएं घूमती रहीं। फिर वो कुछ बड़बड़ाई और उसने अपना हाथ ऊपर करके चिड़िया को छोड़ दिया।



शुरू में चिड़िया सीधे घरों की छतों और पेड़ों के ऊपर उड़ी. अरी खुश हुई - चलो उसकी दिली इच्छा पूरी हुई. फिर चिड़िया कुछ देर आसमान में मंडराई. अपने पंख फैलाकर वो गर्म हवा की लहरों पर आकाश में ऊपर उठी.

“ऊपर उठो. अपने पंख पसारो और मेरी मनोकामनाओं को पूरा करो,” अरी फुसफुसाई.

अरी बेहद खुश थी. बहुत दिनों बाद वो अब हंस रही थी. उसने इस एक क्षण के लिए 300 रीएल खर्च किये थे. इस परम आनंद के लिए वो एक बहुत छोटी राशि थी.





चिड़ियों वाली औरत ने कुछ नहीं कहा. वो सिर्फ उकड़ू बैठी रही.

फिर वो हुआ जो शायद पहले हजारों बार हुआ होगा. वो उड़ती चिड़िया आसमान से उतरी बिल्कुल उसी तरह जैसे कोई पत्ती पेड़ से गिरती है.

अरी चिल्लाई. "नहीं! तुम उड़ती रहो. पीली हवा में ऊपर उठो!"

पर वो छोटी चिड़िया उस औरत की उंगली पर आकर बैठ गई. फिर औरत ने पिंजरा खोला और वो छोटी चिड़िया पिंजरे में एक बांस की सींक पर जाकर बैठ गई. अब वो चिड़िया अन्य कैद चिड़ियों के ही गीत गाने लगी. उसकी आवाज़ ऊंची थी. वैसे वो अकेली थी, पर उसके आसपास सौ और चिड़िये थीं.

उसके बाद चिड़ियों वाली औरत अपने अगले ग्राहक का इंतज़ार करने लगी.

अरी को अब पक्का पता था कि अब उसकी मनोकामना कभी पूरी नहीं होगी. अगर वो चिड़िया उड़ी ही नहीं तो फिर उसके लिए नया भविष्य कैसे आएगी? वो चिड़िया अब जेल की आदी हो चुकी थी. उस पिंजरे के जेल में उसे अपने लायक खाना-पानी मिल जाता था.

अरी रोने लगी.

वो जितनी तेज़ी से संभव था घर की ओर रोते-रोते दौड़ी. वो चुपके से घर में घुसी. भाग्यवश अभी भी सब लोग सो रहे थे. यह हमारा पिंजरा है, अरी ने सोचा और फिर वो दुबारा चटाई पर लेट गई. उस चिड़ियों वाली औरत ने मुझे धोका दिया. यहाँ तस्वीर वही बनी रहती है, बिल्कल नहीं बदलती है. वही नमकीन मछली और भात. वही फटे कपड़े. दरवाज़े से सैकड़ों मक्खियों का आगमन. काश! मेरे भी पंख होते और मैं भी उड़ पाती. अपने पंख उठाकर कहीं भी चली जाती.

"कहीं भी!" अरी ने ज़ोरों से कहा.

अरी को अपने गुस्से से आश्चर्य हो रहा था. उसकी आवाज़ से परिवार के बाकी सदस्य अपनी नींद से उठ गए. उसके छोटे भाई का नाम था सेरी. सेरी का मतलब होता है "आज़ादी". सेरी ने भी अपनी आँखें मलीं.

"क्या कुछ हुआ?" उसने पूछा.

अरी काफी परेशान थी और वो कुछ नहीं बोली.

सेरी ने उठकर प्यार से अपनी बहन के कंधे को छुआ.

फिर दोनों ने खुले दरवाज़े के बाहर देखा जहाँ से तेज़ सूरज की रोशनी घर में आ रही थी.

उनके परिवार के लिए एक नया दिन शुरू हुआ था.





उसके बाद के दिन भी पहले के दिनों जैसे ही बीते. पर अरी परिवार की हालत सुधारने के अपने सपने को कभी नहीं भूली.

एक दिन मेकोंग नदी के किनारे फूलों के गजरे बेंचने के बाद अरी ने अपने दादाजी से पूछा, “मुझे यह बताएं की एक व्यक्ति एक बार में कितनी मन्नतें मांग सकता है?”

दादाजी बूढ़े थे. उन्होंने कुछ देर सोचा.

“गहरी सांस लेकर तुम एक सांस में जितनी चाहो उतनी मन्नतें मांग सकती हो. देखो, एक गहरी सांस लो. फिर धीमे-धीमे सांस बाहर फूँकों. अपनी सारी मन्नतों को उस एक सांस पर सवार होने दो.”

अरी को लगा की परिवार को लेकर उसके ज़हन में इतनी इच्छाएं थीं कि शायद एक सांस में उन्हें कह पाना बहुत मुश्किल हो.

“हाँ, एक बात और याद रखना अरी. जैसे हम चाहते हैं वैसे हमारी मन्नतें अक्सर पूरी नहीं होती हैं.”

“एक बात और बताएं दादाजी – क्या आपको लगता है कि पिंजरे में बंद चिड़िये हमारी मनोकामनाओं को पूरा कर सकती हैं?”

“ज़रूर मेरी बेटी, पर उसके लिए तुम्हें एक भाग्यशाली चिड़िया चाहिए.”

“भाग्यशाली चिड़िया! पिंजरे की सौ चिड़ियों में से मैं उसे कैसे चुनूँ?”

यह सुनकर दादाजी मुस्कराए. “अरी याद रखना कि तुम्हारे नाम का मतलब है “ज्ञान”. उसके बाद दादाजी ने और कुछ नहीं कहा.



अब हर दिन अरी कुछ सिक्के बचाती थी और बाकी पैसे अपने पिताजी को देती थी. खाली समय में अरी बड़े ध्यान से चिड़ियों के पिंजरे को देखती थी.

शुरु में तो उसे सभी चिड़िये देखने में एक-सामान लगीं. पर लम्बे अर्से तक देखने के बाद उसे हरेक चिड़िया की विशेषताएं समझ में आने लगीं. कुछ शर्मीली थीं. कुछ दादागिरी करती थीं! उसे अपने दादाजी के शब्द याद थे. उनमें से कोई भी चिड़िया उसे भाग्यशाली नज़र नहीं आई जो उसकी इच्छाओं को पूरा कर सके.

फिर एक दिन सुबह के समय अरी ने चिड़ियों वाली औरत को पिंजरे में एक नई चिड़िया रखते हुए देखा. वो चिड़िया एक कोने में दुबककर बैठ गई. वो डरी थी - कोई चुगगा नहीं खा रही थी और न ही पानी पी रही थी. उस चिड़िया में वो सम्भावना थी जिसे बाकी चिड़िये भूल चुकी थीं.





अगले दिन सुबह-सुबह अरी अपनी चटाई से उठी और मंदिर की सीढ़ियों की तरफ दौड़ी. वहां पर चिड़ियों वाली औरत अपनी सौ चिड़ियों के साथ पहले से ही मौजूद थी. वो उकड़ू बैठी थी और अपने पहले ग्राहक का इंतज़ार कर रही थी.

“मैं एक और चिड़िया खरीदना चाहती हूँ?” अरी ने उससे कहा.

“तुम यहाँ से जाओ. पिछले कई दिनों से तुम मेरी चिड़ियों को बहुत घूर-घूर कर देख रही हो,” चिड़ियों वाली औरत ने कहा.

“देखो मेरे पास 400 रीएल हैं जिनसे मैं वो कोने वाली चिड़िया खरीदना चाहती हूँ,” अरी ने कहा.

“तुम उस चिड़िया को छोड़कर पिंजरे की किसी भी और चिड़िया को ले सकती हो,” औरत ने कहा.

अब तक अरी, चिड़िया वाली उस औरत की सब चालें समझ गई थी. अरी ने अपने हाथ उठाए. वो मुट्ठी में पैसे कसकर पकड़े थी. अरी ने अपना सर हिलाया और कहा, “अपनी चिड़िए अपने पास रखो! मुझे मेकाँग नदी पर एक और चिड़ियों वाला पता है.”

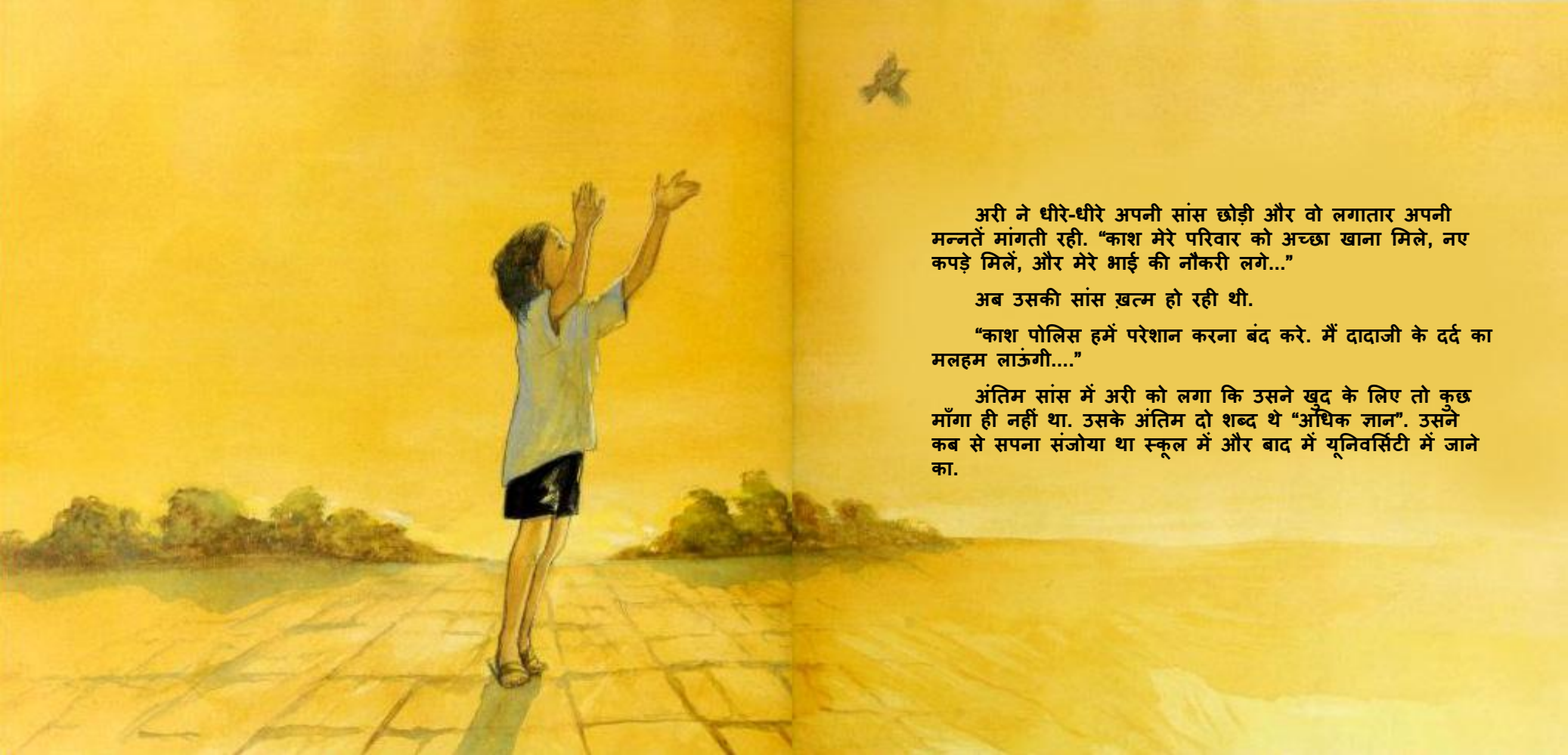
फिर अरी वहां से जाने लगी. यह पुराना तरीका था सस्ते में चीज़ें खरीदने का जिससे वो अच्छी तरह वाकिफ थी. पर उसमें कुछ जोखिम भी था.

अभी अरी तीन कदम आगे ही गई होगी कि बूढ़ी औरत ने चिल्लाकर कहा, “अच्छा आओ. पिंजरे में से जो मर्जी चाहें वो चिड़िया चुनो. ध्यान रखो वो कोने वाली चिड़िया बीमार है. अगर तुमने उसे चुना तो वो मर जाएगी.”

अरी ने बूढ़ी औरत को पैसे थमाए. फिर उसने पिंजरे के दरवाज़े में अपना हाथ घुसाया. वो नयी चिड़िया अभी भी कांप रही थी पर वो अरी के हाथ के सामने से नहीं हटी. अरी ने उसे सावधानी से बाहर निकाला और फिर अपने पोरों से उसके पंखों को धीरे से सहलाया.

वो चिड़िया के दिल की धड़कन को आसानी से सुन सकती थी. अरी ने चिड़िया के सर को चूमा. उसने चिड़िया को अपने हाथ से ऊपर उठाया और फिर एक लम्बी, गहरी सांस ली. उसने धीमे से अपनी उँगलियाँ खोलीं. एक क्षण के लिए चिड़िया सहमी फिर उसके पंख फड़फड़ाए और वो अरी का हाथ छोड़कर आसमान में उड़ी.





अरी ने धीरे-धीरे अपनी सांस छोड़ी और वो लगातार अपनी मन्नतें मांगती रही. “काश मेरे परिवार को अच्छा खाना मिले, नए कपड़े मिलें, और मेरे भाई की नौकरी लगे...”

अब उसकी सांस खत्म हो रही थी.

“काश पुलिस हमें परेशान करना बंद करे. मैं दादाजी के दर्द का मलहम लाऊंगी....”

अंतिम सांस में अरी को लगा कि उसने खुद के लिए तो कुछ माँगा ही नहीं था. उसके अंतिम दो शब्द थे “अधिक ज्ञान”. उसने कब से सपना संजोया था स्कूल में और बाद में यूनिवर्सिटी में जाने का.

वो चिड़िया के बड़े गोले में उड़ी.

चिड़ियों वाली औरत काफी परेशान हुई. अरी खुशी से ऊपर-नीचे कूदी. "छोटी चिड़िया! वहां जाओ जहाँ पीली और निर्मल हवा हो, जहाँ ज़मीन हरी हो. अपने पंखों पर मेरी मनोकामनाओं को लेकर जाओ!"





धीरे-धीरे वो चिड़िया छोटी और छोटी होती गई. वो पूरब की तरफ उड़ी
जहाँ सुबह का सूरज नींबू के छिलके जैसा पीला होता था. अब अरी को पक्का
पता था की एक दिन उसकी इच्छाएं ज़रूर पूरी होंगी. वो कब होगा यह बात
अभी अनिश्चित थी!

